कक्षा-10
हिंदी

UP BOARD EXAM 2024

काव्य सौन्दर्य के तत्व (रस)

हास्य एवं करुण

2
नंबर पक्के

एक दम बेसिक से

विभाव:- जिसके कारण रस प्राप्त होता है।

प्रकार-2

- आलम्बन विभाव
  - (आलम्बन) → जिसके कारण स्थाई भाव जगे।
  - (आश्रय) → जिसके हृदय में स्थाई भाव जगे।
- उद्दीपन विभाव → स्थाई भावों को उद्दीप्त करें।

रस, छन्द, अलंकार

(क) रस

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति: "

-भरतमुनि

"विभाव अनुभाव एवं व्यभिचारी (संचारी) भाव आदि के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।"

- **स्थायी भाव :-**सहृदय (पाठका दर्शक) के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहे।

विभाव:- जिसके कारण रस प्राप्त होता है।

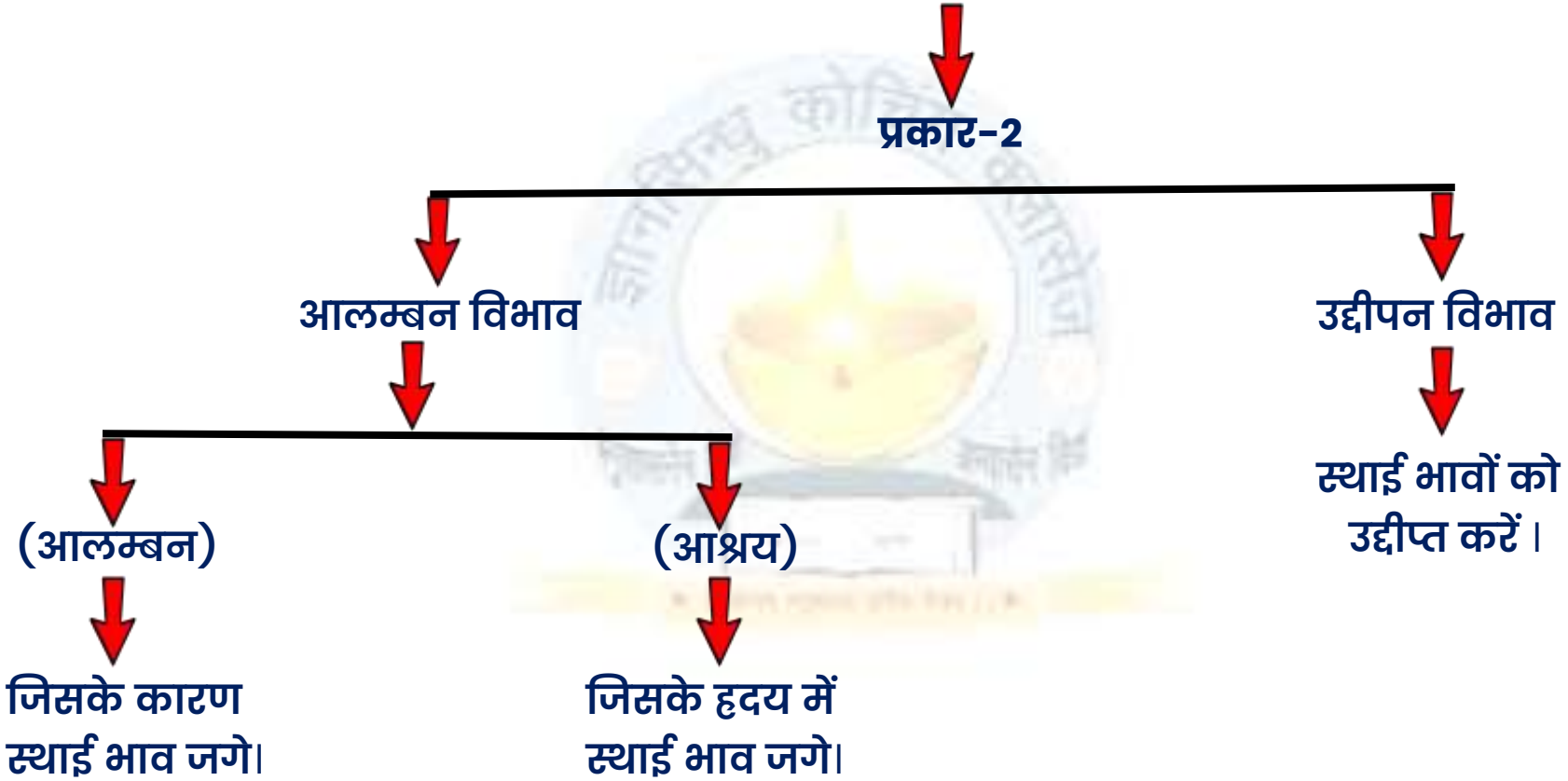

- **अनुभाव**→ आश्रय की बाह्य चेष्टाएँ ।

  जैसे- रोमांच, कम्पन, स्वेद। ,

- **संचारी भाव**→क्षण भर के लिए उठने वाले भाव।

  33↓

  (पानी के बुलबुलों के समान)

हास्य रस

परिभाषा→

किसी की विकृत वेशभूषा, चेष्टा आदि को देखकर जब 'हास' 'नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि द्वारा पुष्ट होता है, तब हास्य रस की निष्पत्ति होती है।

जैसे→"जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली ॥
पुनि-पुनि मुनि उमगहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।"

स्पष्टीकरण→

- **स्थायी भाव**→ हास
- **विभाव** → **आलम्बन –** नारद मुनि **आश्रय**- हर-गन
  उद्दीपन- विलक्षण आकृति, चेष्टा ।
- **अनुभाव**→हँसना, खड़े होना, भागना।
- **संचारी भाव**→हर्ष, चपलता, चंचलता ।

अन्य उदाहरण→

- बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे।
  गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिबंद सुखारे॥
  ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
  कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥
- हँसी हँसी भांजै देखि दूलह दिगम्बर को
  पाहुनि जै आवै हिमाचल के उछाव में !
  कहे पद्माकर यू सोकाहु सो कहे को कहा
  जोई जहाँ देखै सो हंसे है तांई राह में !

मगन भये ईस हंसे नगन महेश ठाढ़े
और हंसे एऊ हंसी हंसी के उमाह में !
शीश पर गंगा हंसे भुजनि भुजंगा हंसे
हास ही को दंगो भयो नंगा के विवाह में !!

⭐करूण रस⭐

⭐**परिभाषा**→'शोक' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से 'करूण रस' की निष्पत्ति होती है।

अथवा

ईप्सित/ इष्ट वस्तु के नाश से जब हृदय में क्षोभ / दुःख उत्पन्न होता है, उस उत्पन्न क्षोभ को करुण रस कहते हैं।

जैसे→

"अभी तो मुकुट बंधा था माथ।
हुए कल ही हल्दी के हाथ ॥
खुल भी नये लाब के बोल
'बिले थे चुम्बन शून्य कपोल।
हाय रुक गया यहीं संसार,
बना सिंदूर अनल अंगार।

वातहतृ' 'लतिका यह सुकुमार
पड़ी है हिन्ना धार ॥"

स्पष्टीकरण →

स्थायी भाव→ शोक

विभाव→**आलम्बन** → अभिमन्यु

उद्दीपन→ अभिमन्यु का मृत शरीर,

आश्रय→ अभिमन्यु की पत्नी

अनुभाव→सिर पटकना, छिन्आधार पड़े होना।

संचारी भाव→ स्मृति, विषाद, प्रलाप विलाप

अन्य उदाहरण→

- “शोक विकल सब रोवहिं रानी।
  रूप शील बल तेज बखानी।।
  करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
  परहिं भूमि-तल बारहिं बारा ।।"

- मणि खोये भुजंग-सी जननी, फन सा पटक रही थी शीश।
  अन्धी आज बनाकर मुझको, किया न्याय तुमने जगदीश।।

- जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
  अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।